चना लड़का

ईरान की परी कथा

पुनर्कथन: फ्रेडेरिका ब्राउन

चित्र: रॉबर्ट डन



सूप से बाहर

एक दिन, एक गरीब और विनम्र महिला अपने और अपने पति के लिए कुछ सूप बना रही थी. जैसे ही उसने अपना काम पूरा किया, उसने कामना की कि काश उसका अपना एक बच्चा होता. उसे बहुत आश्चर्य हुआ, जब एक चना बर्तन से बाहर निकला और एक छोटे लड़के में बदल गया.





"तुम कौन हो?" महिला चिल्लाई. "तुम कहां से आये हो?"

"हैलो, माँ," चने लड़के ने कहा. "मैं वही बच्चा हूँ जिसकी आपने इच्छा की थी! क्या मैं पिताजी के लिए कुछ सूप लेकर जाऊँ?"

महिला ने उसे सूप का एक बड़ा कटोरा दिया, और चना लड़का उसे सावधानी से मेज पर ले गया.

"नमस्ते पिताजी!" चने लड़के ने कहा.

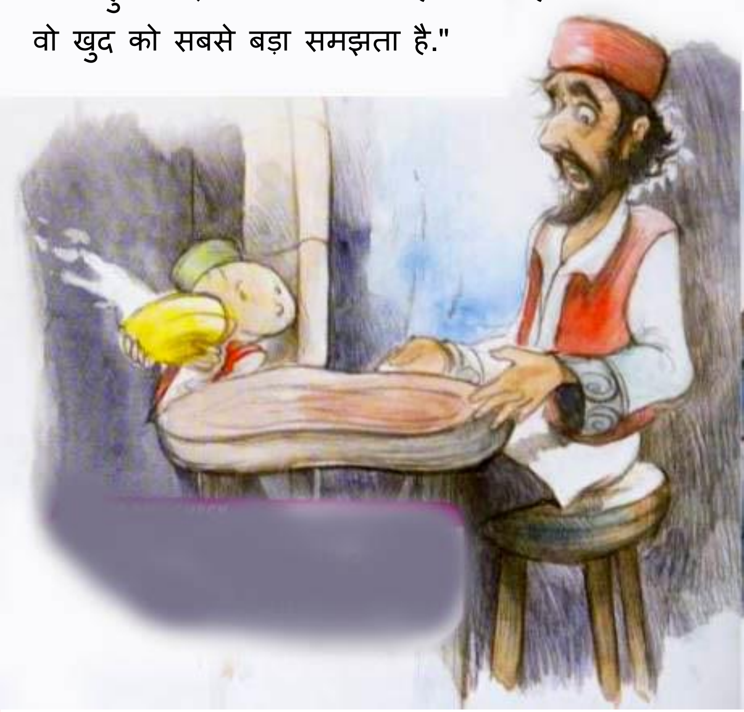
"यहाँ कुछ सूप है जो माँ ने आपके लिए बनाया है."

"तुम कौन हो?" आदमी ने पूछा.

"मैं आपका बेटा हूं," चने लड़के ने उत्तर दिया.

"अगर तुम हो?" आदमी ने कहा. "तब तुम मेरा एक काम करो. बहुत पहले मैंने राजा को एक सिक्का उधार दिया था. जाओ और राजा से उसे वापस मांगकर लाओ. उसके लिए तुम्हें काफी मेहनत करनी पड़ सकती है. क्योंकि राजा अपना लिया हुआ क़र्ज़ जल्दी वापिस नहीं करता है.

वो खुद को सबसे बड़ा समझता है."



राजा से मिलने के लिए प्रस्थान

चना लड़का चल पड़ा. वो चलता रहा और जल्द ही वो एक नदी के पास पहुंचा. वहां एक महिला कपड़े धो रही थी. चने लड़के ने उस महिला से अपनी टोपी धोने को कहा.

"नहीं, मैं तुम्हारी टोपी नहीं धोऊंगी," महिला ने कहा. "मुझे पहले ही काफी धुलाई करनी है!"





"फिर तुम धुलाई नहीं कर पाओगी!" चने लड़के ने कहा. वो नीचे झुका और फिर वो पूरी नदी का पानी पी गया. फिर वो महिला को अपने पीछे घूरता हुआ छोड़कर आगे बढ़ गया.

थोड़ा आगे बढ़ने पर एक तेंदुआ बाहर कूदा.

"तुम कहां जा रहे हैं?" तेंदुए ने पूछा.

"मैं राजा से एक सिक्का लेने जा रहा हूँ," चने लड़के ने कहा.

"क्या मैं भी आ सकता हूं?" तेंदुए ने पूछा.

"देखो, वो एक लंबा रास्ता है," चने लड़के ने कहा.

"तुम मुझे सवारी दे सकते हो," तेंदुए ने कहा.

"ठीक है, कूद जाओ," चने लड़के ने कहा.

उसने अपना मुंह खोला और तेंदुआ उसके मुंह के अंदर कूद गया.



थोड़ा आगे बढ़ने पर एक भेड़िया बाहर कूदा.

"तुम कहां जा रहे हो?" भेड़िये ने पूछा.

"मैं राजा से एक सिक्का लेने जा रहा हूँ," चने लड़के ने कहा.

"क्या मैं भी आ सकता हूं?" भेड़िए ने पूछा.

"देखो, वो एक लंबा रास्ता है," चने लड़के ने कहा.

"तुम मुझे सवारी दे सकते हो," भेड़िये ने कहा.

"ठीक है, कूद जाओ," चने लड़के ने कहा.

उसने अपना मुँह खोला और भेड़िया उसके मुंह के अंदर कूद गया.

थोड़ा आगे बढ़ने पर एक सियार उछलकर बाहर आया.

"तुम कहां जा रहे हो?" सियार ने पूछा.

"मैं राजा से एक सिक्का लेने जा रहा हूँ," चने लड़के ने कहा.

"क्या मैं भी आ सकता हूं?" सियार ने पूछा.

"देखो, वो एक लंबा रास्ता है," चने लड़के ने कहा.

सियार ने कहा, "तुम मुझे सवारी दे सकते हो."

"ठीक है, कूद जाओ," चने लड़के ने कहा.

फिर उसने अपना मुंह खोला और सियार चने लड़के के मुंह में कूद गया.





राजा के दरबार में

आख़िर में चना लड़का राजा के दरबार में पहुँचा. जैसा कि पिताजी ने कहा था, राजा ने सिक्का वापस देने से इनकार कर दिया. राजा ने अपने सेवकों को आदेश दिया कि चने लड़के को उसके लड़ते हुए पक्षियों के पास फेंक दिया जाए.

राजा ने कहा, "पक्षी उसके टुकड़े-टुकड़े करके उसे खा जाएंगे."

नौकरों ने चने लड़के को लड़ते पक्षियों के साथ अकेला छोड़ दिया. जैसे ही वो अकेला हुआ, चने लड़के ने अपना मुँह खोला. भेड़िया और सियार बाहर कूदे और उन्होंने सभी पक्षियों को पकड़ लिया. फिर वो दोनों अपने घर चले गये. सुबह जब राजा के सेवक वापस आये तो उन्होंने चने लड़के को उनका इंतज़ार करते हुए पाया.

सेवकों ने राजा तक वो समाचार पहुंचाया

राजा ने कहा, "उसे चिड़ियाघर में फेंक दो! मेरे जानवर उसे सफाचट्ट कर जायेंगे."

सेवकों ने वैसा ही किया जैसा उन्हें आदेश दिया गया था. जैसे ही चना लड़का अकेला हुआ, उसने अपना मुँह खोला. उसके मुंह से तेंदुआ बाहर कूदा, और वो सभी जानवरों को खा गया.

सुबह जब राजा के सेवक वापिस लौटे तो उन्होंने चने लड़के को सुरक्षित और स्वस्थ पाया.



सेवकों ने राजा तक समाचार पहुंचाया.

"उसे जलते भूसे वाले कमरे में फेंक दो!" राजा ने आदेश दिया. "चना लड़का भीषण आग और उस ज़हरीले धुएं को झेल नहीं पाएगा."

सेवकों ने वैसा ही किया जैसा उनसे कहा गया था. लेकिन जैसे ही चना लड़का अकेला हुआ, उसने अपना मुँह खोला. नदी का पानी तेज़ धार से बाहर निकला और उसने आग बुझा दी. फिर चना लड़का सोने चला गया. अगली सुबह जब राजा के सेवक वहाँ पहुंचे तो उन्होंने चने लड़के को अभी भी सोते हुए पाया.





राजा को अब समझ नहीं आया कि वो क्या करे. फिर उसने अपने सबसे बुद्धिमान सलाहकार से पूछा.

"मुझे नहीं लगता कि हम इस लड़के से निबट पाएंगे," सलाहकार ने कहा, "बेहतर यही होगा कि हम उसका सिक्का लौटा दें और उससे जाने को कहें."

"मुझे इस बात को स्वीकार करने से नफरत है," राजा ने कहा, "लेकिन मुझे लगता है कि वही सबसे अच्छा होगा."

अनिच्छा से, राजा ने अपने सेवकों को चने लड़के को खजाने वाले कमरे में ले जाने का आदेश दिया. सेवकों ने वैसा ही किया जैसा उनसे कहा गया था. जैसे ही वो शानदार कमरे में अकेला हुआ, चने लड़के ने अपना मुँह खोला और फिर वो सारा सोना और चाँदी निगल गया. अंत में उसने एक सिक्का हाथ में लिया और अपने घर चल दिया.

जब चना लड़का घर पहुंचा, तो उसने सिक्का अपने पिता को सौंप दिया. उसने अपनी मां को गले लगाया. जैसे ही माँ ने अपने बेटे की पीठ थपथपाई, उसका मुँह खुल गया और उसमें से सोना और चाँदी तेज़ी बाहर आने लगी. वे अब गरीब और दीन नहीं रहे. वे अमीर बन गए.





अंत